लड़कों और लड़कियों के सर्वांगीण विकास के लिए सभी प्रशिक्षण जहाँ तक संभव हो लाभ देने वाले व्यवसाय के माध्यम से दिया जाना चाहिए - महात्मा गांधी

कनेक्ट

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद

खंड 6 अंक 3 मार्च 2020 www.mgncre.org

ग्रामीण प्रबंधन पाठ्यक्रम में बीबीए - राज्यों में गति आगे बढ़ाना अगले शैक्षणिक वर्ष में पाठ्यक्रम शुरू करने के लिए एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर किए जा रहे हैं ...

"यह वास्तव में वही पाठ्यक्रम है जिसकी हम तलाश कर रहे हैं! हम अगले शैक्षणिक वर्ष 2020-2021 में इसे शुरू करने से ज्यादा खुश होंगे "..... श्री गोपाल नारायण सिंह, कुलपति गोपाल नारायण सिंह विश्वविद्यालय सासाराम बिहार और एम.पी. राज्य सभा ने कहा कि उन्होंने ग्रामीण प्रबंधन पाठ्यक्रम में बी.बी.ए. की शुरूआत के लिए एम.जी.एन.सी.आर.ई. के साथ एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर किए।

एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर - संस्थापक डीन फैकल्टी ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज प्रो आलोक कुमार, सचिव (बाएं) श्री गोविंद नारायण सिंह, एम.जी.एन.सी.आर.ई. अकादमिक विशेषज्ञ पद्म जुलुरी, उपकुलपति डॉ.एम एल वर्मा, कुलसचिव डॉ. राधे श्याम जायसवाल, परीक्षा नियंत्रक प्रो. कुमार आलोक प्रताप

श्री श्री विश्वविद्यालय, कटक, भुवनेश्वर ग्रामीण प्रबंधन में बी.बी.ए. और एम.बी.ए. दोनों पाठ्यक्रम शुरू करने के लिए एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर किए

श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्व विद्यालय इंदौर के सांसद डॉ.उपेंद्र धर, वी.सी. और डॉ. राजीव शुक्ला, निदेशक ने एम.बी.ए. / बी.बी.ए. आर.एम. शुरू करने के लिए एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर किए

गाँव परियोजना कार्यों के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करते हैं। आपको गांवों में उपलब्ध संसाधनों का अध्ययन करने की आवश्यकता है - मानव और प्राकृतिक। ग्राम विकास योजना ग्रामीण तल्लीनता कार्यक्रम का परिणाम है .....। अध्यक्ष, एम.जी.एन.सी.आर.ई. डॉ. डब्ल्यू.जी. प्रसन्न कुमार ने कहा कि उन्होंने 18 फरवरी को रामकृष्ण मठ हैदराबाद में बड़े पैमाने पर ग्रामीण तल्लीनता प्रशिक्षण कार्यक्रम को संबोधित किया। रामकृष्ण मठ में बैठक में 29 इंजीनियरिंग कॉलेजों ने भाग लिया जिसमें 1273 छात्र और संकाय शामिल थे।

ग्रामीण तल्लीनता प्रशिक्षण कार्यक्रम ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता, स्वच्छता को बढ़ावा देने और खुले में शौच को समाप्त करने के लिए जीवन की सामान्य गुणवत्ता में सुधार लाने के उद्देश्यों के साथ आयोजित किया गया था; स्थायी स्वच्छता प्रथाओं और सुविधाओं को अपनाने के लिए समुदायों को प्रेरित करना; पारिस्थितिक रूप से सुरक्षित और स्थायी स्वच्छता के लिए लागत प्रभावी और उपयुक्त तकनीकों को प्रोत्साहित करना; उन्नत भारत अभियान (यू.बी.ए.) के उद्देश्यों पर काम करना; और यूनिसेफ के जल स्वच्छता और स्वच्छता (वॉश) उद्देश्यों पर काम कर रहा है।

वेलनेस एड्यूकेटर और मुख्य वक्ता डॉ. विवेक मोदी ने अपने उत्साही भाषण और गतिविधियों से छात्रों को प्रेरित किया। उन्होंने छात्रों से इस अवसर का उपयोग करने का आह्वान किया क्योंकि उनके पास उन्नत भारत अभियान के माध्यम से योगदान करने और गांवों में बदलाव लाने के लिए प्रौद्योगिकी हस्तक्षेप करने का एक मंच है। सुश्री टी. संध्या - सीनियर संकाय एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने पी.आर.ए./पी.एल.ए. तकनीकों और ग्रामीण तल्लीनता कार्यक्रम करने के विभिन्न तरीकों पर विस्तार से बताया। उन्होंने गांवों की मैपिंग कैसे की जाती है यह प्रदर्शित किया - सामाजिक, संसाधन, धन, प्राकृतिक। श्री रवितेजा, सलाहकार यूनिसेफ ने करियर के बारे में एक शक्तिशाली प्रस्तुति दी, जिसमें छात्रों को आगे बढ़ने की जरूरत है और पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन में संतुलन बनाने के लिए उन्हें क्या करने की जरूरत है। स्वामी आर.के. मठ ने ध्यान की बारीकियों पर प्रकाश डालकर कार्यक्रम को आध्यात्मिक स्पर्श दिया और कैसे आंतरिक शांति बनाए रखने से जीवन को संतुलन मिलता है।

संपादक का नोट

हमारी परिषद ने नागालैंड के स्कूलों में काम करना शुरू कर दिया है, और इसने कई अच्छे परिणाम दिए हैं। किचन गार्डन प्रणाली एक हार्दिक सफलता रही है। हमें अपने किसानों की मदद और समर्थन करने की जरूरत है। हम देश में अपने ग्रामीण पाठ्यक्रमों को बढ़ावा देने की योजना बना रहे हैं। हमारे पास किसानों सहित ग्रामीण क्षेत्रों के लिए पाठ्यक्रम हैं, जो वर्तमान में संकट में हैं और ऐसी पहल और पाठ्यक्रमों के साथ, हम उनकी स्थिति को बेहतर बनाने की उम्मीद करते हैं। हर विज्ञान पाठ्यक्रम में एक इंजीनियरिंग घटक होना चाहिए। अन्यथा यह ज्ञान व्यवहार में नहीं आता है। हर इंजीनियरिंग कोर्स में प्रबंधन और उद्यमिता होनी चाहिए। उद्योग अभिविन्यास और वास्तविक जीवन चुनौती अभिविन्यास आवश्यक हैं। यही कारण है कि यह उद्योग और उद्यमशीलता के निरंतर और निरंतर अभिविन्यास के साथ एक एकीकृत पाठ्यक्रम का समय है। यह खुशी की बात है कि हमारे बी.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन पाठ्यक्रम को भारत भर के विश्वविद्यालयों द्वारा स्वीकार किया जा रहा है और अगले शैक्षणिक वर्ष से इस पाठ्यक्रम के लेनदेन के लिए एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर किए जा रहे हैं। हमने उद्योग-अकादमी मीट और प्रदर्शनियों, व्यापक स्वच्छता प्रबंधन, संबंधित एफ.डी.पी. और कार्यशालाओं में 100 गाँव और 200 गाँव के केस स्टडी को पूरा करके स्वच्छ भारत योजना को उसके उपयोग के लिए लाया है। बड़े पैमाने पर ग्रामीण तल्लीनता प्रशिक्षण कार्यक्रम 29 इंजीनियरिंग कॉलेजों और लगभग 1300 प्रतिभागी छात्रों और संकायों के साथ एक शानदार सफलता प्राप्त किये। हमने इस वित्तीय वर्ष के लिए अपनी प्रतिबद्धताओं को पूरा कर लिया है।

डॉ. डब्ल्यू.जी. प्रसन्न कुमार
अध्यक्ष, एम.जी.एन.सी.आर.ई.

हमारी बी.बी.ए. आर.एम. टीम ग्रामीण प्रबंधन में बी.बी.ए. को बढ़ावा देने के लिए उच्च शिक्षा के राज्य परिषदों, उच्च शिक्षा के लिए मंत्रियों, उच्च शिक्षा के सचिवों, विश्वविद्यालयों के उपकुलपतियों, एफ.पी.ओ., सी.एस.आर. के पहल और प्रमुख हितधारकों के साथ आधारभूत बन रही है। शैक्षिक संस्थान-उद्योग-नियोक्ता-उद्यमी संबंधों का निर्माण करना महत्वपूर्ण है और कलेक्टरों और स्थानीय उद्यमियों की मदद पर जोर नहीं दिया जा सकता है। हमने अपनी स्वच्छता कार्य योजना को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है। अपशिष्ट प्रबंधन और सामाजिक उद्यमिता में हमारा एम.बी.ए. कार्यक्रम 15 उ.शि.सं. में पेश किया जा रहा है, जबकि ग्रामीण प्रबंधन पाठ्यक्रम में हमारे बी.बी.ए. भी एक दुर्जेय चैंपियन बन गए हैं। अगले शैक्षणिक वर्ष से लेनदेन मोड पर पाठ्यक्रम प्राप्त करने के लिए भारत भर के कई विश्वविद्यालय एम.जी.एन.सी.आर.ई. के साथ एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर कर रहे हैं। यह वास्तव में एक बड़ी उपलब्धि है!

डॉ. भरत पाठक
उपाध्यक्ष, एम.जी.एन.सी.आर.ई.

वी.सी. डॉ. वीरेंद्र कुमार शर्मा, द्वारा बी.बी.ए. और एम.बी.ए. कोर्स दोनों के लिए ग्रामीण प्रबंधन में एम.ओ.यू. हस्ताक्षरित, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान में।

माधव विश्वविद्यालय, सिरोही, राजस्थान ने इस शैक्षणिक वर्ष में बी.बी.ए. और एम.बी.ए. आर.एम. पाठ्यक्रम शुरू करने के लिए एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर किए

उपकुलपति डॉ. संजीव कालिया, रजिस्ट्रार और माधव विश्वविद्यालय के डीन

रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल के प्रो वाइस चांसलर बिहार, झारखंड और छत्तीसगढ़ में अपने विश्वविद्यालयों के लिए एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर करने के लिए सहमत हुए

जयोति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, संस्थापक और सलाहकार डॉ.पंकज गर्ग, राजस्थान ने अगले आगामी शैक्षणिक सत्र के लिए ग्रामीण प्रबंधन में बी.बी.ए. और एम.बी.ए. दोनों कार्यक्रम शुरू करने के लिए स्वीकृति दी।

श्री कृष्ण विश्वविद्यालय, छतरपुर, म.प्र. में बी.बी.ए. आर.एम. पाठ्यक्रम की प्रस्तुति

14 फरवरी को शासन परिषद की बैठक हुई

सेंचुरियन विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार के साथ, परलाखेमंडी, ओडिशा। वे इस शैक्षणिक वर्ष बी.बी.ए. आर.एम. कोर्स शुरू करने के इच्छुक हैं।

यू.के.ए. तरसाडिया विश्वविद्यालय, बारडोली गुजरात अध्यक्ष के के साथ

डॉ. प्रणव पंड्या जी के साथ, डी.एस.डब्ल्यू. के कुलपति और शांति कुंज गायत्री परिवार, हरिद्वार के प्रमुख

क्वांटम विश्वविद्यालय रुड़की के कुलपति (मालिक) के साथ

राज्यों में राउंडटेबल

शूलिनी विश्वविद्यालय, सोलन हि.प्र. में राउंड-टेबल बैठक

डॉ. पी.के. खोसला, संस्थापक और वी.सी. शूलिनी विश्वविद्यालय, डोलन, हि.प्र.

बिहार के माननीय शिक्षा मंत्री श्री के एन प्रसाद वर्मा को बी.बी.ए. आर.एम. पाठ्यक्रम का विवरण देना

राउंड-टेबल

प्रो.एच.एस. धालीवाल, वी.सी. एटर्नल विश्वविद्यालय, बारू साहिब, हि.प्र.एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर करते हुए

ग्रामीण विकास, बिहार के माननीय मंत्री, श्री शरवन कुमार को आर.एम. पाठ्यक्रम में बी.बी.ए. प्रस्तुत करना

डॉ. रेखा कुमारी, निदेशक, उच्च शिक्षा, बिहार को आर.एम. पाठ्यक्रम में बी.बी.ए. और एम.बी.ए. के बारे में स्पष्ट

श्री अजीत कुमार, उप निदेशक, उच्च शिक्षा, बिहार सरकार, आर.एम. पाठ्यक्रम में बी.बी.ए. में अत्यंत रुचि दिखाए

श्री बृजेश मेहरोत्रा, आई.ए.एस., राज्यपाल बिहार के मुख्य सचिव के साथ निजी विश्वविद्यालयों और उ.शि.सं. में आर.एम. में बी.बी.ए. शुरू करने पर चर्चा

श्री अरविंद कुमार चौधरी, आई.ए.एस., प्रमुख सचिव, ग्रामीण विकास विभाग, बिहार को ग्रामीण प्रबंधन पाठ्यक्रम में बी.बी.ए. का विवरण साझा करना

श्री सतीश चंद्र झा, बिहार के विशेष सचिव, शिक्षा को बी.बी.ए. आर.एम. पाठ्यक्रम का साझा किया और विस्तार से बताया

श्री आर.के.महाजन, आई.ए.एस., अपर मुख्य सचिव, शिक्षा, बिहार, बी.बी.ए. आर.एम. पहल की बहुत सराहना किये।

श्री चेड्डी पासवान, माननीय सांसद सासाराम बिहार के साथ बैठक

प्रो. सुधीर कुमार, प्राचार्य, महिला कॉलेज, सासाराम को एम.जी.एन.सी.आर.ई. की गतिविधियों के बारे में व्याख्या करना। आर.एम. में बी.बी.ए. पर भी चर्चा की।

माननीय जिला मजिस्ट्रेट और कलेक्टर, रोहतास जिला, श्री पंकज दीक्षित के साथ। उन्होंने सभी उच्च माध्यमिक विद्यालयों को एक आदेश भेजने के लिए सहमति व्यक्त की है। अपने 12वीं ग्रेड के छात्रों के परीक्षा समाप्त होने पर और अभिभावकों को नौकरी के अवसरों पर प्रदर्शनी के लिए आमंत्रित करने का सहमति दी है।

प्रभारी प्राचार्य डॉ. बीरेंद्र प्रसाद और बी.बी.ए. के संकाय की उपस्थिति में आर.एम. में बी.बी.ए. के लिए शेर शाह कॉलेज में राउंड-टेबल बैठक

श्री अजय कुमार सिंह, बी.बी.ए. संकाय और एस.पी.जैन कॉलेज, सासाराम के अन्य संकाय सदस्यों के साथ राउंड-टेबल बैठक। प्राचार्य डॉ.देवी प्रसाद तिवारी, वी.सी. कुंवर सिंह यूनिव, आरा के साथ स्टेशन से बाहर थे

گوپال نارائن سنگھ یونیورسٹی میں بی بی اے کورس کا آغاز

नए सत्र में बीबीए के तहत कचरा, जल संचयन व आपदा प्रबंधन के पाठ्यक्रम होंगे शुरू

एसपी कॉलेज में होगी ग्रामीण विकास प्रबंधन की पढ़ाई

विवेकानंद आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज फॉर विमेन- एशिया का सबसे बड़ा महिला कॉलेज में राउंडटेबल बैठक

अपशिष्ट प्रबंधन और सामाजिक उद्यमिता पर पुस्तकों का प्रकाशन करना

एडमस विश्वविद्यालय कोलकाता 4-5 फरवरी

प्रो. मधुसूधन चक्रवर्ती, उपकुलपति ने कहा कि, "इस तरह की पहल समाज, राज्य और देश में बदलाव लाने के लिए असली माइलस्टोन हैं यह आश्चर्यजनक है कि हमें अभी भी लोगों को अपशिष्ट प्रबंधन के बारे में जागरूक करना है"।

एडमस विश्वविद्यालय में दो दिवसीय उद्योग अकादमी मीट एंड एग्जिबिशन ऑन वेस्ट मैनेजमेंट एंड सोशल एंटरप्रेन्योरशिप में पश्चिम बंगाल के विभिन्न हिस्सों के 15 प्रदर्शकों ने अपने उत्पादों को नियमित रूप से दिन-प्रतिदिन के अपशिष्ट उत्पादों से प्रदर्शित किया। माननीय उपकुलपति, प्रो मधुसूधन चक्रवर्ती, एडमस विश्वविद्यालय, दिलीप कुमार चक्रवर्ती, अकादमिक सलाहकार, एम.जी.एन.सी.आर.ई., श्री निरंजन मित्रा, कार्यकारी अधिकारी, बारासात नगर पालिका, प्रो. ज्योत्सना याग्निक, प्रो-वीसी और डीन, स्कूल ऑफ लॉ एंड जस्टिस, प्रो. त्रिदीब चक्रवर्ती, स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज के डीन, और प्रो. परिमल चंद्र बिश्वास, डीन ऑफ स्टूडेंट अफेयर्स एंड इंटरनेशनल रिलेशंस, एडमस विश्वविद्यालय। बरसाट नगर पालिका के कार्यकारी अधिकारी श्री निरंजन मित्रा ने अपशिष्ट प्रबंधन पर बारासात नगर पालिका की पहल पर ध्यान केंद्रित किया। प्रो. ज्योत्सना याग्निक, प्रो-वीसी और डीन, स्कूल ऑफ़ लॉ एंड जस्टिस, एडमस विश्वविद्यालय ने अपशिष्ट प्रबंधन के लिए कानूनों और सामाजिक मानदंडों पर प्रकाश डाला। प्रो.परिमल चंद्र विश्वास, स्टूडेंट्स अफेयर्स एंड इंटरनेशनल रिलेशंस के डीन, एडमस विश्वविद्यालय ने भारत सरकार को एम.जी.एन.सी.आर.ई., एडमस विश्वविद्यालय, उद्योग के लोगों, वक्ताओं, मेहमानों और सभी छात्रों को भारत को स्वच्छ और शुद्ध बनाने के लिए आगे की पहल करने के लिए धन्यवाद दिया। एक प्रतीकात्मक इशारे के रूप में, मेहमानों को विभिन्न प्रकार के कचरे को अलग करने और कचरे को 6 बाल्टी में प्लास्टिक कचरे, कागज अपशिष्ट, ई-कचरे, कांच के कचरे, धातु अपशिष्ट और खाद्य अपशिष्ट के रूप में जागरूकता पैदा करने के लिए कहा गया। 10 स्कूलों के अध्ययन के 300 से अधिक छात्रों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया, जिसमें 3000 की कुल संख्या थी।

मणिपाल विश्वविद्यालय जयपुर 19-20 फरवरी

कचरे से मूल्य वर्धित उत्पादों का निष्कर्षण, अपशिष्ट प्रबंधन की एक प्रभावी तकनीक है... अध्यक्ष, एम.जी.एन.सी.आर.ई. वहाँ उद्योग में शामिल हुए और कुछ ऐसे कहा। अकादमिक मीट का शीर्षक- वेस्ट: वेल्थ एंड एंटरप्रेन्योरशिप मुख्य अतिथि के रूप में।

बैठक में अपशिष्ट हैंडलिंग और उपचार के क्षेत्रों में मौजूदा चुनौतियों और आगामी अवसरों पर ध्यान केंद्रित किया गया। आयोजन में उद्योग, आई.आई.टी., एन.आई.टी. और अन्य शैक्षणिक संस्थानों के प्रतिष्ठित वक्ताओं ने अपने विचार साझा किए। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता डॉ. जी.के. प्रभु, अध्यक्ष एम.यू.जे. ने की। उन्होंने ऐसे सम्मेलनों की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला, जहां छात्रों को उद्योगों, शिक्षा और अनुसंधान के लोगों के साथ बातचीत करने के लिए एक मंच मिलता है।

उन्होंने भी एम.यू.जे. द्वारा की गई कुछ पहलें प्रस्तुत कीं जैसे कि विश्वविद्यालय भवनों और पार्किंग क्षेत्र में सौर ऊर्जा पैनलों के कार्यान्वयन। अपने भाषण में, उन्होंने उल्लेख किया कि विश्वविद्यालय परिसर और छात्रावास परिसर के भीतर उत्पन्न विभिन्न प्रकार के कचरे को संभालने और प्रबंधित करने के लिए परिसर में विभिन्न सुविधाएं हैं। अपशिष्ट जल के उपचार के लिए परिसर में अपशिष्ट उपचार इकाई और सीवेज उपचार इकाइयाँ स्थापित की गई हैं और उपचारित पानी को पुन: उपयोग के लिए और सिंचाई के लिए पुनर्नवीनीकरण किया जाता है। विश्वविद्यालय ने आस-पास के 5 गाँवों को भी अपनाया है और इन गाँवों के उत्थान के लिए काम कर रहा है। विशेष आमंत्रितों में श्री वी.के. दाधीच, सलाहकार, यू.डी.एच. और एल.एस.जी. विभाग, राजस्थान सरकार, प्रोफ. एस.पी. चौरसिया, डीन फैकल्टी वेलफेयर, एम.एन.आई.टी. जयपुर भी शामिल थे।

विशिष्ट अतिथि, श्री सुरेंद्र सिंह राठौर, सी.ई.ओ., जैव ईंधन प्राधिकरण ,राजस्थान ने युवा छात्रों को अपने ज्ञान का उपयोग करने और अपने स्वयं के स्टार्ट अप विचारों के साथ आगे आने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने उल्लेख किया कि यदि ठीक से संभाला नहीं गया तो दुनिया भर में कार्बन पदचिह्न एक प्रमुख मुद्दा होगा। छात्रों को सरकार की विभिन्न योजनाओं के बारे में अवगत कराया गया जो स्टार्ट-अप विचारों को बढ़ावा देते हैं और उनका समर्थन करते, एक अपेक्षाकृत हरियाली और स्वच्छ वातावरण प्राप्त करने के लिए जैव ईंधन उत्पादन के लिए हैं।

डॉ. रामदास एम पाई, चांसलर, मणिपाल विश्वविद्यालय, प्रो (डॉ) एच रविशंकर कामथ, रजिस्ट्रार, मणिपाल विश्वविद्यालय ने भी अपने अनुभव साझा किए। डॉ. राकेश के जैनटैक्निकल विशेषज्ञ, यू.एन.आई.डी.ओ. आई.सी.-आई.एस.आई.डी.; श्री भूपेंद्र दलवाडी सी.ई.ओ., बी.ई.आई.एल.; डॉ. कौस्तुभ मोहंती प्रोफेसर, केमिकल इंजीनियरिंग विभाग, आई.आई.टी. गुवाहाटी; श्री पवन दीक्षित उपाध्यक्ष - संचालन, क्वेस कॉर्प ; डॉ. निवेदिता कौल एसोसिएट प्रोफेसर, सिविल इंजीनियरिंग विभाग, एम.एन.आई.टी. जयपुर; श्री मनिंदर सिंह उप- सी.ई.ओ., जैव ईंधन प्राधिकरण, राजस्थान; प्रो.के.के. पंत, प्रोफेसर, केमिकल इंजीनियरिंग विभाग, आई.आई.टी. दिल्ली; डॉ. शैलेश मकाडिया, संस्थापक, राधे ग्रुप ऑफ़ एनर्जी; डॉ. विवेक अग्रवाल,प्रमुख, सी.डी.सी. इंडिया; डॉ. संदीप श्रीवास्तव, सहायक प्रोफेसर, सिविल इंजीनियरिंग विभाग, एम.एन.आई.टी. जयपुर; श्री प्रसाद कोकिल एम.डी., इकोसेंस; डॉ. साक्षी अग्रवाल रिसर्च साइंटिस्ट, कुमारप्पा नेशनल हैंडमेड पेपर इंस्टीट्यूट (के.एन.एच.पी.आई.); और डॉ. सुनील दाधीच एसोसिएट प्रोफेसर, मृदा विज्ञान और कृषि रसायन विज्ञान विभाग, राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान के मुख्य वक्ता थे। मेजर शिवा किरण, एम.जी.एन.सी.आर.ई. वरिष्ठ संकाय और सुश्री दिव्या छाबड़ा संकाय एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने कार्यवाही का समन्वय किया। कचरा प्रबंधन क्षेत्र में करियर बनाने की आवश्यकता पर बल दिया गया।

एन.आई.टी. वारंगल 28-29 फरवरी

"अपशिष्ट प्रबंधन अभ्यास समय की आवश्यकता है। इस क्षेत्र में नौकरी के अवसर बहुत बड़े हैं। " मुख्य अतिथि डॉ. एस साईराम, महाप्रबंधक (पर्यावरण और प्रदूषण नियंत्रण) एन.एफ.सी. ने कार्यवाही का उद्घाटन करते हुए कहा।

Experts delve into waste management

HANS NEWS SERVICE

Warangal: The need of the hour is to give emphasis on waste management practices, Dr S Sairam, General Manager, Environment and Pollution Control and Waste Management, said. He was speaking at the two-day Industry-Academia Meet on the Waste Management, jointly organised by the National Institute of Technology (NIT), Warangal, and Mahatma Gandhi National Council of Rural Education, MHRD, here on Friday. Dr Sairam spoke about waste management practices in the Atomic Energy department.

The programme encompasses industry-academia interaction and an exhibition as part of introducing M Tech in Waste Management at NIT Warangal and MBA Program in Waste Management and Social Entrepreneurship developed by MGNCRE, MHRD.

NIT Director Prof NV Ramana Rao thanked Dr WG Prasanna Kumar, Chairman, MGNCRE, for bringing on board such a programme and for creating career opportunities in the waste management sector. He also announced the launch of M.Tech in Waste management with 20 seats in NITW. Prof KV

NIT Director Prof NV Ramana Rao lighting the lamp at the two-day meet in NIT Warangal on Friday

Jayakumar, Civil Engineering Department, Dr JV Rao, Associate Professor Civil Engineering Department, Srinivas, General Manager of Ramky Group and MGNCRE program coordinator BSC Naveen also spoke on the occasion.

More than 20 stalls are showcasing their models for waste management. The session enhanced knowledge sharing, industry interaction, internship and project, scope for social entrepreneurship, platforms to interact and meet decision makers.

The exhibitors and participants include experts from waste management technology, equipment manufacturers and suppliers, regulatory bodies, Pollution Control Board, utilities, NGOs, recyclers, private corporates, industrial associations and allied organisations.

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी वारंगल ने दो दिवसीय उद्योग-अकादमिया मीट और प्रदर्शनी का आयोजन किया, जिसमें अपशिष्ट प्रबंधन प्रौद्योगिकी, उपकरण निर्माता और आपूर्तिकर्ता, नियामक निकाय, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, उपयोगिताएँ, एन.जी.ओ., रिसाइक्लर, निजी कॉर्पोरेट, औद्योगिक संघ और संबद्ध संगठनों के विशेषज्ञ शामिल थे। डॉ. एस. साईराम ने वैज्ञानिक स्तर पर ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के संबंध में एक मुख्य संदेश दिया। उन्होंने परमाणु ऊर्जा विभाग में अपशिष्ट प्रबंधन प्रथाओं के बारे में बताया। उन्होंने समाज से समय की आवश्यकता के लिए काम करने का आग्रह किया।

निदेशक एन.आई.टी.डब्ल्यू., प्रो. एन.वी. रमण राव ने कार्यक्रम और आगे के रास्ते पर सभा को संबोधित किया। उन्होंने डॉ. डब्ल्यू.जी. प्रसन्न कुमार के अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. को इस तरह के कार्यक्रम को लाने और अपशिष्ट प्रबंधन क्षेत्र में कैरियर के अवसर पैदा करने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने एन.आई.टी.डब्ल्यू. में 18 सीटों के साथ अपशिष्ट प्रबंधन में एम.टेक शुरू करने की भी घोषणा की। डॉ. पी.वी. राव, सहायक प्रोफेसर सिविल इंजीनियरिंग विभाग ने सभा का स्वागत किया और दिन के कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी। प्रोफेसर के.वी. जयकुमार सिविल इंजीनियरिंग विभाग ने एम.जी.एन.सी.आर.ई. के साथ अपने अनुभव साझा किए, जिसमें अपशिष्ट प्रबंधन और सामाजिक उद्यमिता में एम.बी.ए. कार्यक्रम को अंतिम रूप देने के उनके प्रयास शामिल हैं। पर्यावरण सुरक्षा प्रशिक्षण और अनुसंधान संस्थान के सदस्यों द्वारा रैमकी समूह और स्थायी अपशिष्ट प्रबंधन व्याख्यान द्वारा एकीकृत एम.एस.डब्ल्यू. पर मुख्य व्याख्यान दिए गए। 20 से अधिक स्टालों ने अपशिष्ट प्रबंधन के लिए अपने मॉडल दिखाए। सत्र ने ज्ञान साझा करने, उद्योग संपर्क, इंटर्नशिप और परियोजना, सामाजिक उद्यमिता के लिए गुंजाइश, बातचीत करने और निर्णय निर्माताओं से मिलने के लिए मंच बढ़ाया।

एम.जी.एन.सी.आर.ई. हैदराबाद में यू.बी.ए. को-ऑर्डिनेटरों/एन.एस.एस. पी.ओ. के लिए 15 फरवरी को ग्रामीण तल्लीनता पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

यू.जी.सी.-एच.आर.डी.सी. उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद में ग्रामीण कार्य प्रशिक्षण कार्यक्रम के एक भाग के रूप में गोदुमकुंता के ग्राम भ्रमण के दौरान ग्रामीणों से सीखना 05 - 06 फरवरी

संकाय विकास कार्यशालाएं

कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला विश्वविद्यालय विजयपुरा 24-28 फरवरी

उच्च शिक्षा के माध्यम से ग्रामीण लचीलेपन को बढ़ावा देना - ग्रामीणों से सीखना जारी है - ग्रामीण लचीलेपन पर 5 दिवसीय पाठ्यक्रम विकास कार्यशाला कुलपति प्रो. सबिहा भूमिगुडा द्वारा आयोजित की गई थी। कार्यवाही का समन्वय डॉ. बी. दिवाकर, वरिष्ठ संकाय, एम.जी.एन.सी.आर.ई. द्वारा किया गया। प्रोफ. एस.ए .काजी, निदेशक, योजना, निगरानी और मूल्यांकन बोर्ड और डॉ. विष्णु एम. शिंदे, सहायक सह संयोजक और एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग के.एस.ए.डब्ल्यू.यू.।

पी.एस.जी. कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस कोयम्बटूर 11-15 फरवरी

व्यापक स्वच्छता प्रबंधन (ओ.डी.एफ. सहित) के व्यवहार में 100% उपलब्धि के लिए उच्च शिक्षा संस्थानों की निगरानी क्षेत्र कार्य पर संकाय विकास कार्यक्रम (एफ.डी.पी.)

अवधारणाओं को समझने के लिए लेनदेन पद्धति में व्याख्यान श्रृंखला, पैनल चर्चा, गतिविधियाँ, फोकस समूह चर्चा और पी.एल.ए. और पी.आर.ए. तकनीकों को गांव की यात्रा के रूप में शामिल किया गया। प्रायोगिक शिक्षण 5-दिवसीय कार्यक्रम का एक हिस्सा था जो मुख्य प्रशिक्षण के रूप में खड़ा है जहाँ स्वच्छ और क्रियात्मक शौचालयों, उनके उपयोग, समस्याओं और समाधानों, व्यवहार अनुसंधान और स्वच्छ भारत कार्य कार्यान्वयन के लिए एक उपयुक्त कार्य योजना तैयार करने में अंतर्दृष्टि हैं।

कर्नाटक राज्य ग्रामीण विकास और पंचायत राज विश्वविद्यालय (के.एस.आर.डी.पी.आर.यू.)

एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने शैक्षिक सहयोग के लिए के.एस.आर.डी.पी.आर.यू. के साथ एक एम.ओ.यू. में प्रवेश किया, जिसमें सतत विकास लक्ष्यों, आपदा न्यूनीकरण और उच्च शिक्षा के लिए जलवायु परिवर्तन उन्मुखीकरण को शामिल करने के लिए 5 दिवसीय पाठ्यक्रम विकास कार्यक्रम शुरू किया गया। के.एस.आर.डी.पी.आर. के उपाध्यक्ष (कार्यवाहक) प्रो. डॉ. सुरेश वी. नादगौदर ने अध्यक्षीय भाषण दिया जबकि अध्यक्ष एम.जी.एन.आर.ई. ने मुख्य भाषण दिया।

ग्रामीण तल्लीनता-पी.आर.ए./पी.एल.ए. उपयोग

DISTRICTS

'Changes in higher education syllabus is need of the hour'

पाठ्यक्रम विकास कार्यशालाएँ

द्रविड़ियन विश्वविद्यालय कुप्पम आंध्र प्रदेश

प्रो. जी. लोकनाधा रेड्डी, उप कुलपति, प्रो. टी. अनुराधा, रजिस्ट्रार, सभी विभागों के डीन और प्रमुख ने एक दिवसीय पाठ्यक्रम विकास कार्यशाला की शुरुआत की, जिसने आपदा जोखिम न्यूनीकरण, सतत विकास लक्ष्यों और जलवायु परिवर्तन को आवरण करने वाले पाठ्यक्रम विकास पर ध्यान केंद्रित किया।

विक्रम सिंहपुरी विश्वविद्यालय नेल्लोर

ग्रामीण लचीलापन में छात्रों की भूमिका.. यूनिसेफ और एम.जी.एन.सी.आर.ई. सहयोग

आंध्र केसरी टंगुटुरी प्रकाशम यूनिवर्सिटी ओंगोल

मैंने ग्रामीण लचीलापन बनाने के लिए एक उत्कृष्ट एक दिवसीय पाठ्यक्रम विकास कार्यशाला में भाग लिया। यह सभी स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों के लिए सबसे महत्वपूर्ण और प्राथमिकता वाला विषय है। विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र विभाग के संकाय के रूप में, व्याख्यान, समूह चर्चा और कार्यशाला में ग्रामीण लचीलापन के प्रमुख कारकों के बारे में भाषण किसी भी देश के आर्थिक विकास के लिए ग्रामीण लचीलापन के लिए पाठ्यक्रम विकास के महत्व को समझने के लिए बहुत उपयोगी हैं। भारत एक युवा संचालित अर्थव्यवस्था है, इसलिए छात्रों को ग्रामीण समुदायों के बारे में जागरूकता, ज्ञान और व्यावसायिकता प्राप्त करनी चाहिए और उन्हें ग्रामीण चुनौतियों को सीखने, ग्रामीण भारत के सतत विकास के लिए ग्रामीण जीवन शैली का ज्ञान रखने के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। जैसा कि महात्मा गांधी ने कहा था, 'यदि भारत ने भारत को नष्ट कर दिया तो भारत भी नष्ट हो जाएगा।' पर्यावरण अर्थशास्त्र, मानव संसाधन प्रबंधन और हमारे पाठ्यक्रम में अर्थशास्त्र के लिए गणितीय तरीके और सांख्यिकी के लिए सांख्यिकीय तरीके जैसे पेपर-आधारित, क्षेत्र-आधारित, रिपोर्ट प्रस्तुतियाँ। अंत में, मुझे कार्यक्रम में भाग लेने का मौका देने के लिए समन्वयक को धन्यवाद देती हूं और मैं अपने ए.के.टी.पी.यू. में इस तरह के शानदार कार्यक्रम के संचालन के लिए एम.जी.एन.सी.आर.ई. को अपना धन्यवाद देती हूं।.

डॉ. ए. भारती देवी
सहा. प्रोफ़ेसर
अर्थशास्त्र विभाग
ए.के.टी.पी.यू. औपचारिक रूप से ए.एन.यू. ओंगोल परिसर, ओंगोल, प्रकाशम (जिला)
आंध्र प्रदेश

ग्रामीण तल्लीनता प्रशिक्षण कार्यक्रम के भाग के रूप में गाँव का दौरा 18-19 फरवरी- कुछ झलक

गाँव राष्ट्रीय शरीर की कोशिका है और कोशिका का जीवन स्वस्थ और विकसित होना चाहिए और राष्ट्रीय शरीर स्वस्थ और विकसित होना चाहिए।

- श्री अरबिंदो

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद

उच्च शिक्षा विभाग

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार

5-10-174, शक्कर भवन, ग्राउंड फ्लोर, फ़तेह मैदान रोड, हैदराबाद-500 004, तेलंगाना.

दूरभाष: 040-23422112, 23212120, फैक्स: 040-23212114, ई-मेल: editor@mgncre.in, वेबसाइट: www.mgncre.org

संपादकीय टीम: डॉ. डब्ल्यू.जी.प्रसन्न कुमार, अध्यक्ष, एम.जी.एन.सी.आर.ई., डॉ.डी.एन.दास, सहायक निदेशक, अनसूया.वी, संपादक

श्री पी.मुरली मनोहर, सदस्य-सचिव, एम.जी.एन.सी.आर.ई. द्वारा प्रकाशित